मैं कहाँ से आया हूँ?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अपने अस्तित्व का ज्ञान हो जाने पर यह ज्ञान आवश्यक है कि मैं कहाँ से आया हूँ? आत्मा पहले है या कर्म? कर्मों का आत्मा से सम्बन्ध कब हुआ? यह प्रश्न प्रायः सभी दर्शनों के समक्ष उपस्थित होता है। प्रत्येक दर्शन अपने–अपने ढंग से इस प्रश्न का उत्तर देते हैं। मुर्गी पहले थी या अण्डा यह विचित्र प्रश्न है। यदि मुर्गी पहले थी तो प्रश्न यह उठता है कि मुर्गी कहाँ से आयी? यदि अण्डा पहले था तो प्रश्न होता है कि अण्डे की उत्पत्ति कैसे हुई? इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि यह पश्चानुपूर्वी है। अनादि अनन्त काल से एक–दूसरे से जुड़े हैं। हमारा वर्तमान का जन्म ही नहीं है इसके पूर्व भी न जाने कितने जन्म हो चुके हैं। पुनर्जन्म को मानना पड़ता है। मैं कहाँ से आया हूँ इसे जानने के लिए भूत, वर्तमान और भविष्य की तरफ देखना पड़ता है।

चौरासी लाख जीव योनियों का जन्म–मरण का चक्र निरन्तर चल रहा है। जीव चार गतियों में परिभ्रमण करता रहता है। नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गतियों में जीव कर्मों के अनुसार भ्रमण करता है। जीवों की यही चार गतियां हैं। आत्मा न तो मरती है, न तो नष्ट होती है। शरीर में परिवर्तन अवश्य होता है। जो जैसा कर्म करता है वह उसके अनुसार जन्म प्राप्त करता है। जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। प्रश्न उठता है कि जन्म और मृत्यु आत्मा का होता है या शरीर का? आत्मा अजर–अमर अविनाशी है। आत्मा न तो मरता है और न जन्म लेता है। यह शाश्वत है। शरीर ही जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़ता है। जन्म और मरण से आत्मा का अस्तित्व नहीं मिटता।

मानव अपने जीवन में किये हुए कर्म का परिणाम इस जीवन में या अगले जीवन में अवश्य प्राप्त करता है। जीव अपने किये हुए कर्मों के अनुसार एक गति से दूसरे गति में परिवर्तित होते रहते हैं। एक ही जीव अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार कभी मनुष्य, कभी देवता, कभी तिर्यंच और कभी नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप जीव

देवगति और मनुष्य गति में जन्म पाता है और बुरे कर्म के परिणामस्वरूप जीव तिर्यंच और नरक गति में जन्म ग्रहण करता है।

मनुष्य पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि औदारिक शरीर वाले होते हैं। इस शरीर की रचना स्थूल पुद्गलों से होती है। मोक्ष की प्राप्ति औदारिक शरीरों से हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त, वसा, मज्जा आदि होते हैं। देवता और नारकीय जीवों का वैक्रिय शरीर होता है। शरीर को छोटा करना, बड़ा करना, सूक्ष्म करना, स्थूल करना आदि क्रियाएं वैक्रिय शरीर से कि जा सकती है। चतुर्दश पूर्वों के ज्ञाता साधु आवश्यक कार्य या सत्य को जानने के लिए जो शरीर धारण करते हैं, वह आहारक शरीर है। जो शरीर आहार आदि को पचाने में सहायक है और जो तेजोमय है, वह तैजस कार्मण शरीर है। यह सभी संसारी जीवों का शरीर कहलाता है। यह शरीर तब तक रहता है, जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती। औदारिक शरीर जन्मसिद्ध होता है। वैक्रिय शरीर जन्मसिद्ध और लब्धि दोनों प्रकार का होता है। आहारक शरीर योगशक्ति से प्राप्त होता है।

प्रवाह रूप से आत्मा और शरीर का संबंध अनादि है, किन्तु व्यक्ति रूप से सादि। औदारिक वैक्रिय और आहारक शरीर के अंगोपांग होते हैं, शेष शरीरों के नहीं होते हैं। तैजस और कार्मण शरीर अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। ये दो शरीर सभी संसारी जीवों के प्रवाह रूप से सदैव रहते हैं। औदारिक आदि शरीरों में परिवर्ततन होता रहता है। हमारा जीवन चार गतियों भ्रमण करता रहता है। नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देव ये चार गतियां हैं। चौरासी लाख जीव योनियां हर गति में जीव ग्रहण करती हैं। जो जीव जैसा कर्म करता है, उसे वैसी गति प्राप्त होती है।

नारकीय का अर्थ है नरक गति। इसमें जीव क्यों जाता है? किन कर्मों के कारण नरक गति प्राप्त होती है? मनुष्य ही नरक गति में जाता है। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव इसमें नहीं जाते। महापरिग्रह, हिंसात्मक कार्य करना, पंचेन्द्रिय जीवों का वध करना, मांसाहार का सेवन करना या इसी प्रकार के अन्य जघन्य कृत्य करने से जीव नरकायुष्य कार्मण शरीर प्रायोग्य बंध करता है। नरक योनि के जीव को अनेक यातनाएं भोगनी पड़ती है। नरक लोक पृथ्वी के भीतर है। इसमें जन्म लेने वाले जीव का शरीर मोम की तरह होता है। नारकीय और देवगति वाले जीव वैक्रिय शरीरधारी होते हैं। नारकीय जीवों को आयुष्यकाल लम्बा होता है।

तिर्यंच गति में पशु–पक्षी, पेड़–पौधे या प्राकृतिक जीव होते हैं। झूठा मापतोल करना, कपट धोखाधड़ी करने वाले, माया–मृषा करने वाले तिर्यंच गति में पैदा होते हैं। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव तिर्यंच गति वाले होते हैं। तिर्यंच का आयुष्य काल अधिक लम्बा नहीं होता। इन जीवों को सर्दी, गर्मी सहन करनी पड़ती है। मनुष्य गति सबसे अच्छी गति है। बहुत पुण्य कर्मों के परिणामस्वरूप जीव मनुष्य योनि में जन्म लेता है। मनुष्य गति के जीव पांचइन्द्रियों वाले होते हैं। मनुष्य चारों गतियों में जा सकता है। पेड़–पौधे और तिर्यंच गति के जीव उसी गति में जन्म लेते हैं, जहा वे उत्पन्न हुए हैं। मानव यदि अच्छा कर्म करता है तो देवलोक में जा सकता है। यदि वह बुरा कर्म करता है तो नरक योनि में जाता है।